'चीनी की खपत में गिरावट से कीमतों पर नहीं पड़ेगा फर्क'

[पीटीआई | मुंबई]

रेटिंग एजेंसी इकरा की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि मौजूदा शुगर ईयर में चीनी की खपत में 3 से 3.5 फीसदी की गिरावट से कीमतों और प्रॉफिटेबिलिटी पर कोई फर्क पड़ने की आशंका नहीं है। शुगर ईयर 2017 के लिए देश में शुगर का कंजम्पशन पिछले साल के मुकाबले 3-3.5 पर्सेंट गिरकर करीब 2.4 करोड़ टन रहने की संभावना है।

देश में चीनी की खपत की कई वजहें हैं। इनमें पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम (पीडीएस) में चीनी का कम उठान, नोटबंदी के बाद खपत में शॉर्ट-टर्म गिरावट और बल्क कंज्यूमर्स की ओर से डिमांड में कमी जैसी वजहें शामिल हैं। इन कंज्यूमर्स में सॉफ्ट ड्रिंक मेकर्स, बेकरीज, कनफेक्शनर्स, होटल और रेस्टोरेंट्स, जैसी इकाइयां शामिल हैं। देश में शुगर की कुल डिमांड में इन बल्क कंज्यूमर्स की हिस्सेदारी 60-70 फीसदी है। इकरा की रिपोर्ट में कहा गया है, 'डिमांड में कमी से मौजूदा शुगर ईयर में कीमतों और प्रॉफिटेबिलिटी पर कोई फर्क पड़ने की आशंका नहीं है।'

शुगर ईयर 2017 में घरेलू शुगर कंजम्पशन में गिरावट का ज्यादातर असर शुगर प्रॉडक्शन में उम्मीद से ज्यादा गिरावट से खत्म हो जाएगा। इकरा रेटिंग्स के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और ग्रुप हेड सब्यसाची मजूमदार ने कहा, 'हालांकि, डिमांड में जारी स्लोडाउन का कीमतों पर बुरा असर होगा। इसके साथ ही शुगर कंपनियों के बिजनेस वॉल्यूम्स पर भी मिडियम से लॉन्ग-टर्म में बुरा असर दिखाई देगा।'

शुगर ईयर 2017 में शुगर डिमांड पर कई फैक्टर्स से बुरा असर पड़ेगा। इनमें नोटबंदी के बाद नवंबर-दिसंबर में उठान पर अस्थाई लॉस भी एक वजह है। नोटबंदी की वजह से होलसेलर/ट्रेडर्स ने शुगर का उठान कम कर दिया है। दूसरी चीज, मार्च 2017 में

केंद्र ने राज्य सरकारों को मिलने वाली 4,500 करोड़ रुपये की सब्सिडी वापस ले ली। राज्य इस सब्सिडी का इस्तेमाल पीडीएस के तहत सस्ती चीनी वितरित करने में करते हैं। यह ऑर्डर 2017-18 की शुरुआत से लागू होगा। सब्सिडी वापस लेने का असर राज्यों के चीनी उठान पर दिखाई देगा और इससे सब्सिडाइज्ड शुगर की उपलब्धता कम होगी।

शुगर ईयर 2017 के लिए देश में शुगर की कंजम्पशन पिछले साल के मुकाबले 3-3.5 पर्सेंट गिरकर करीब 2.4 करोड़ टन रहने की संभावना है

इसके अलावा ओपन मार्केट में शुगर की ज्यादा कीमतों से भी इसकी खपत में कमी आएगी। दूसरी ओर, एफएमसीजी कंपनियां भी शुगर का उठान कम रही हैं। कुछ सॉफ्ट ड्रिंक्स ब्रांड्स के खिलाफ शुरू हुए विरोध-प्रदर्शनों के चलते कंपनियां अब चीनी का इस्तेमाल कम करने पर जोर दे रही हैं। इन सॉफ्ट ड्रिंक कंपनियों के खिलाफ बेहद ज्यादा ग्रउंडवॉटर खपत के आरोपों को लेकर तमिलनाडु के कई हिस्सों में विरोध-प्रदर्शन जारी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे सॉफ्ट ड्रिंक्स बनाने वाली कंपनियों की ओर से शुगर की डिमांड में गिरावट आएगी। इकरा के मुताबिक, शुगर ईयर 2017 के दौरान केवल 2.03 करोड़ टन शुगर उत्पादन की उम्मीद है, जबकि देश में 3 से 3.5 करोड़ टन चीनी की खपत होती है। रेटिंग एजेंसी ने शुगर ईयर 2017 में क्लोजिंग स्टॉक्स के 40 से 45 लाख टन पर रहने की उम्मीद जताई है।

The Economic Times

23/3/17